

विषय - अनुपलब्ध

पेज = ७

24 x 12 x 0.1 cm.

रावे ~~॥~~ ८४ ॥ षदिमा ~~॥~~ ॥ षदिमावालय
-तह मोब धीहरत ...

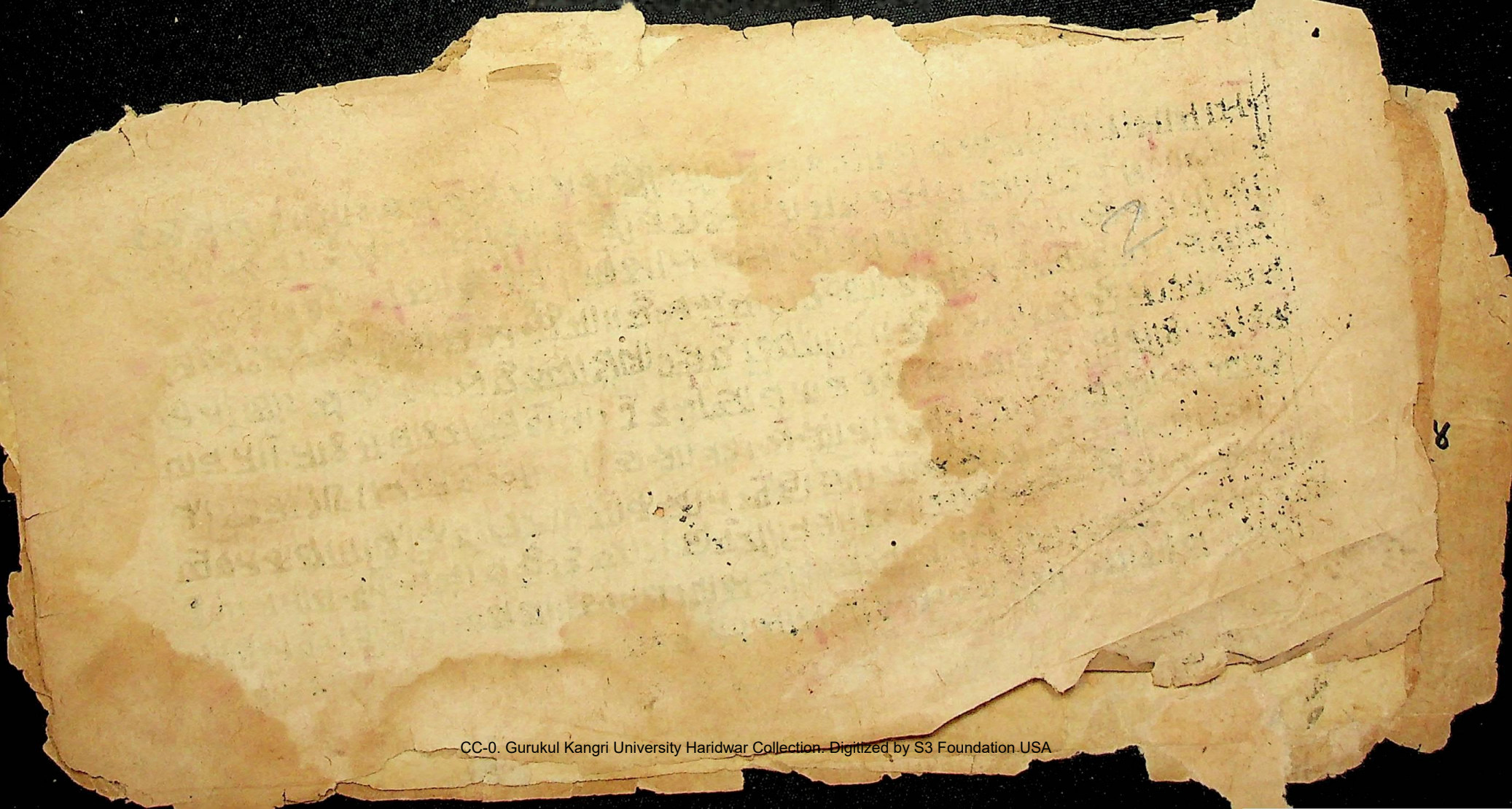
विनाहतात् ॥ ८० ॥ १०० ॥ त्वमत्तमा
त्व

Note- पेज चिपरे हुस है।

61

उ. वि. म.
३५





8

हो विवस्वते स्वाहा गणेश्ये स्वाहा गणपतये स्वाहा हि भुवे स्वाहा धेपतये स्वाहा
 हो शुषाये स्वाहा स० सूर्याय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा नलि म्बु
 वायु स्वाहा दिवापतये स्वाहा ॥ २॥ मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय
 स्वाहा शुक्रये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहा वायु स्वाहा ज्जीय स्वाहा स
 हसे स्वाहा सहस्राय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ॥ ३॥ हसस्य तपसे स्वाहा ॥ ४॥
 वाजीय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा पित्राय स्वाहा कर्तवे स्वाहा स्वस्वाहा सूर्ये स्वा
 हा व्यशुविने स्वाहा स्याय स्वाहा स्याय नो बुनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वा
 धेपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥ ५॥ आयुर्ज्योते न कल्पता ॥ स्वाहा

3

8

॥

५

५
 प्राणो यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥ कल्पता ॐ स्वाहा ॥
 ल्यता ॐ स्वाहा ॥ दानो यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥ समानो यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥
 स्वर्गो यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥ अत्र यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥
 ज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥ मनो यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥
 स्वाहा ॥ ब्रह्मा यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥ ज्योतिर् यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥
 ज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥ एष्टं यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥ यज्ञो यज्ञेन कल्पता ॐ स्वाहा ॥
 स्वाहा ॥ ॥ एकस्मै स्वाहा ॥ द्वाभ्यां स्वाहा ॥ शताय स्वाहा ॥ कत्राता ॥
 स्वाहा ॥ सुगो यस्वाहा ॥ ॥ राजसुनेयसां ॥
 वासरं ॥

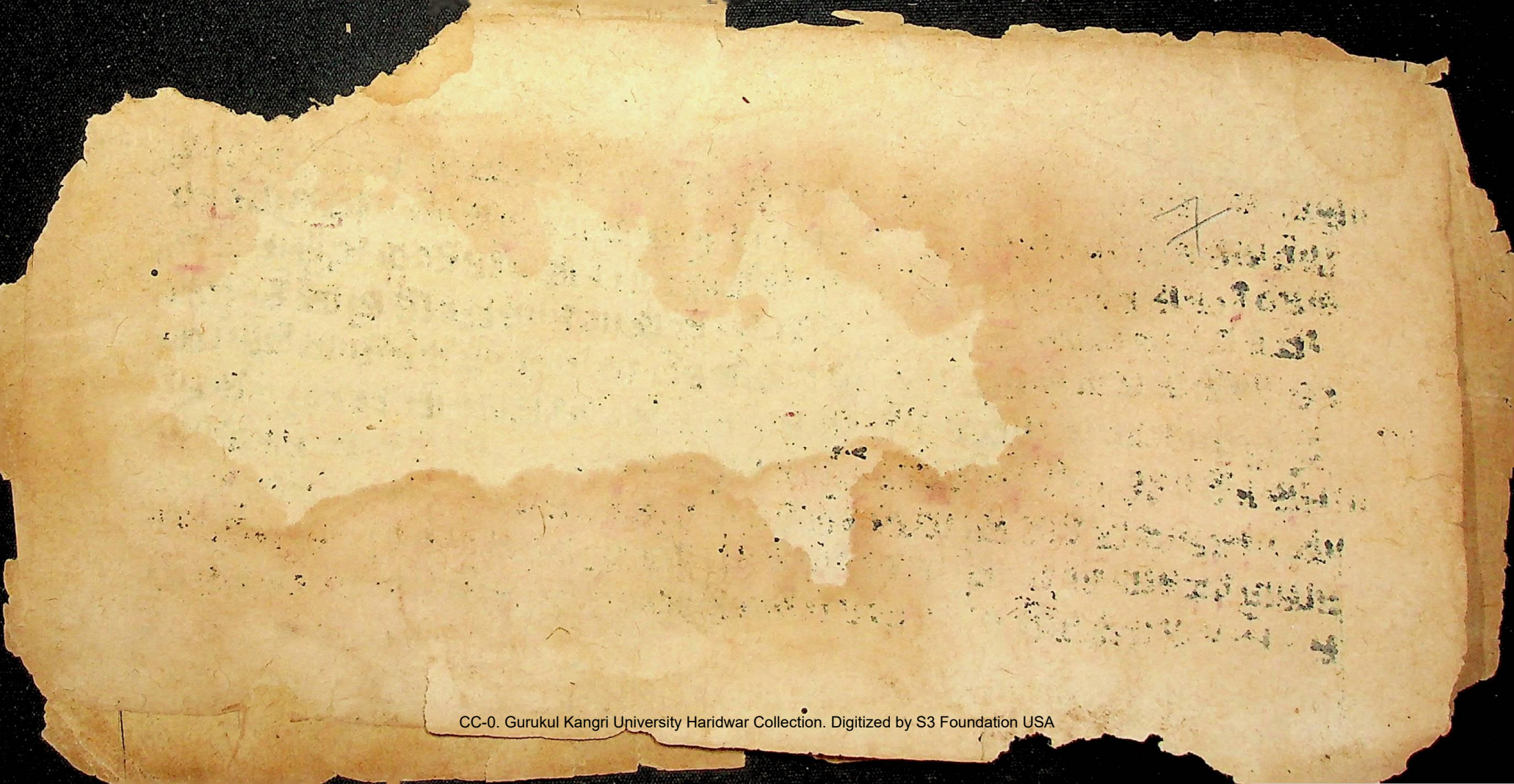
शो ज्येष्ठस्य होतृर्ध्वजः ॥ ३२ ॥ होता च सु
 नां समं जाते सरस्वत्या विधिभिर्देवैर्नैषजः ॥ ३३ ॥
 हृदा श्रियानमासं रम्पयः सोमं परिस्नुतां दृतमधु
 स्य होतृर्ध्वजः ॥ ३४ ॥ होता च क्षुद्रे द्या होता रात्रिषु जाति
 जा गृविं दिवानक्तं नैषजेः शूषां सरस्वतीं हि
 हृदं द्रुचं रम्पयः सोमं परिस्नुतां दृतमधु च त्व
 तृर्ध्वजः ॥ ३५ ॥ होता च क्षुद्रे द्या होता च क्षुद्रे रात्रि
 प सं जं त्रयस्त्रिधा तं नैषजेः हिरण्यं यमं
 चा सरस्वतीं महं द्रुचं द

नक्तं विवाश्रि
 तं जं सां
 न
 ह
 रं स्व
 नये स्वा
 पु स्वाहा

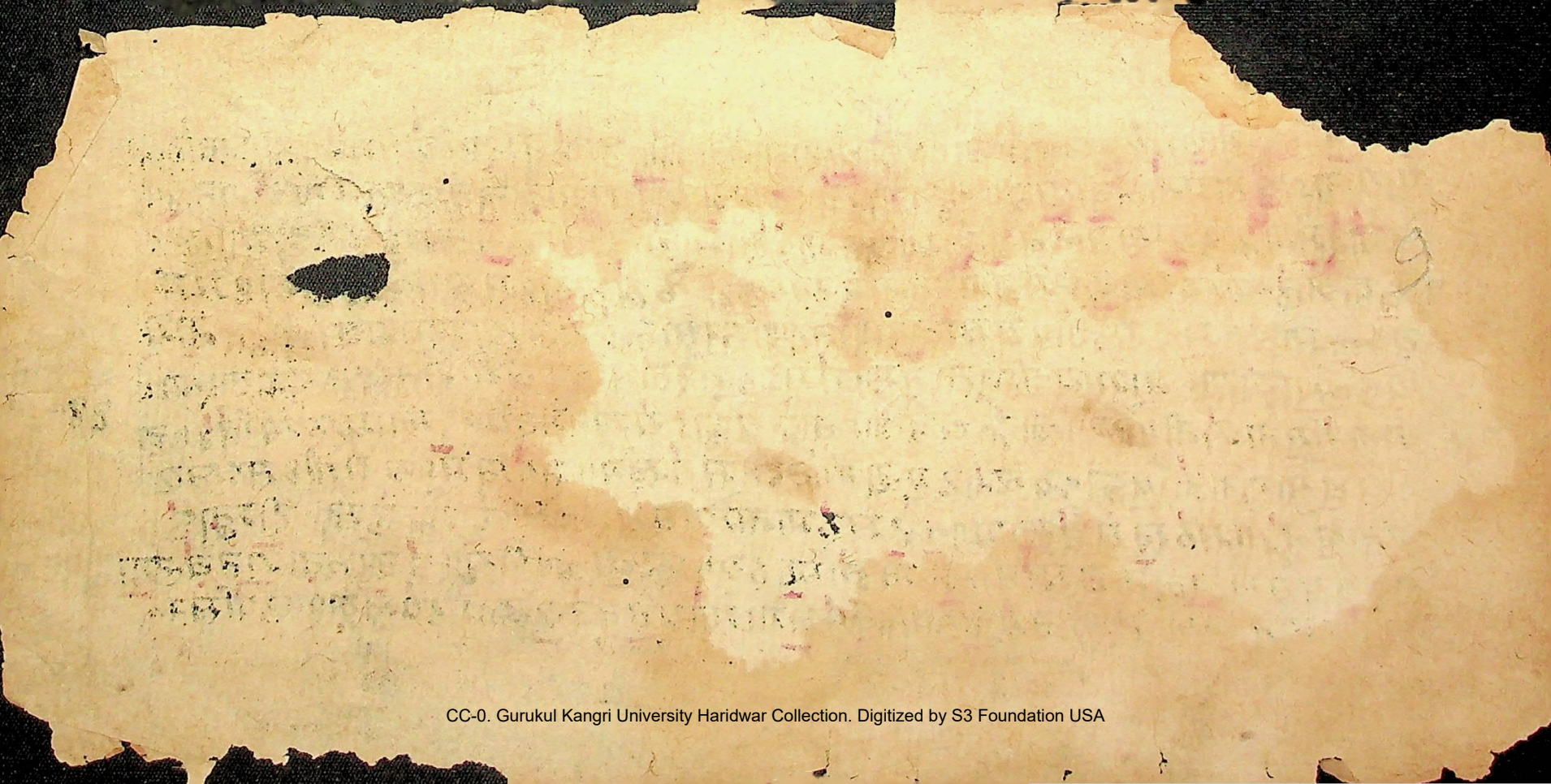
३॥

6

This image shows a blank, aged, cream-colored page, likely an endpaper or flyleaf from an old book. The paper is heavily stained with large, irregular brown and tan water marks, particularly concentrated along the right edge and bottom. There are also several small, dark holes and signs of wear, suggesting insect damage or physical handling over time. The overall texture appears rough and discolored.



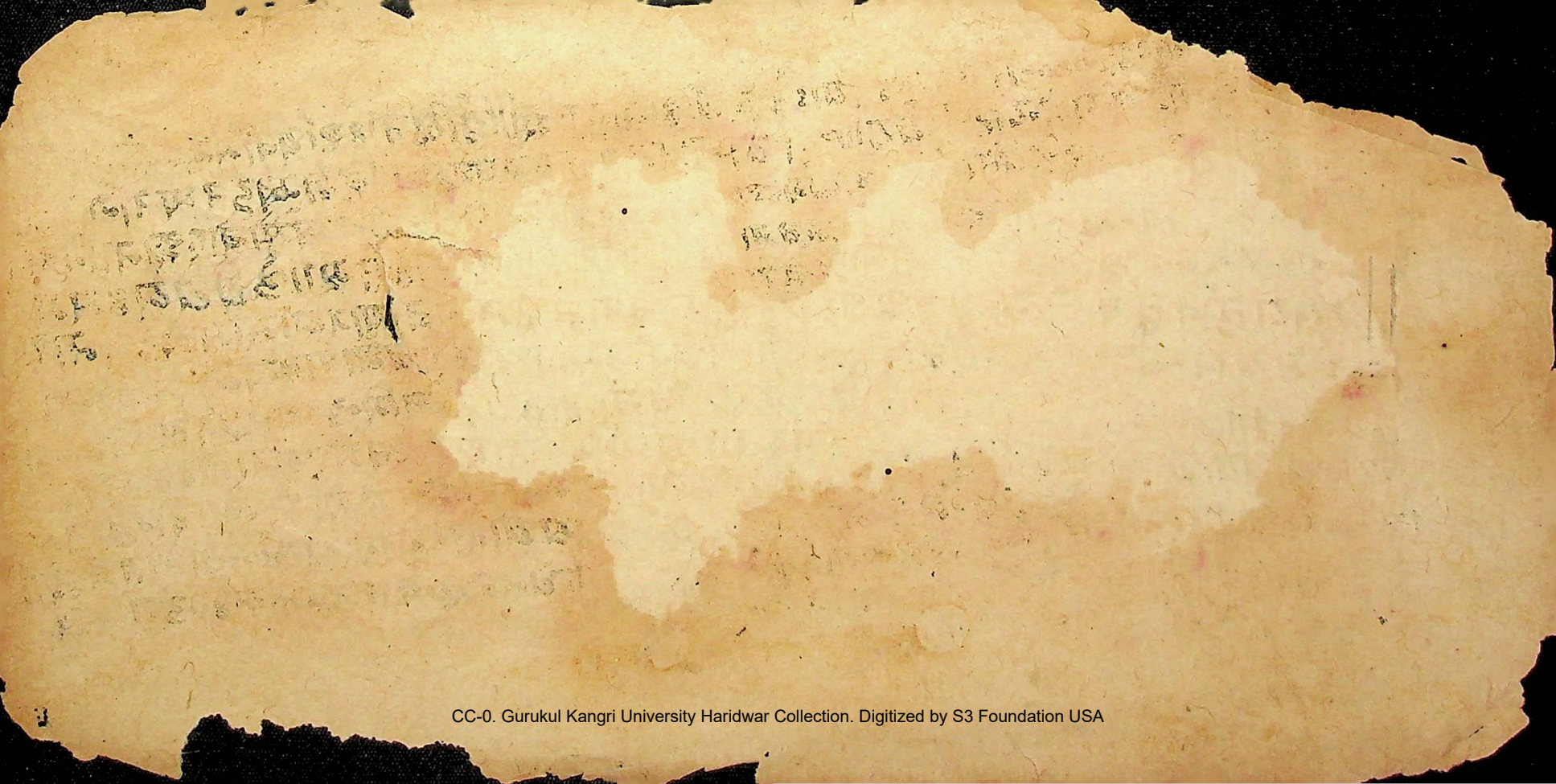
४
 स्याद्विन्द्राः अविमृष्टं वीतिः॥ अहन्तं दस्यमनसा शिवेन सोमश्च यातामिह न
 नृजामि॥ ३५॥ पितृस्य स्वधादित्यः॥ पितृस्य स्वधादित्यः स्वधानमः पिताम
 हस्य स्वधादित्यः स्वधानमः प्रपितामहस्य स्वधादित्यः स्वधानमः॥ अ
 नृत्पितयो मीमदपितयो तीरपत्तपितरः पितरः शुच्यं दमः॥ ३६॥ पुनर्नृमा॥
 पुनर्नृमापितरः सोम्यासः पुनर्नृमापितामहाः पुनर्नृमाप्रपितामहाः पवित्रै
 ताशतायुमा॥ पुनर्नृमापितामहाः पुनर्नृमाप्रपितामहाः पवित्रै ताशतायुधावि
 श्वमायुष्यविद्यैश्च नृवै॥ ३७॥ अग्नेः आद्युषि॥ अग्नेः आद्युषि दवस
 आसुकोर्जमिषश्च न॥ आनेमायस्व दुहूनीम्॥ ३८॥ पुनर्नृमादेव जनीः पुनर्नृ
 मनसाधियः॥ पुनर्नृविश्वात्तानि जोतवेदः पुनीहिमा॥ ३९॥ पुनी
 हि॥ पवित्रै तापुनी हिमाशुक्ले ता देवदीर्घतर॥ अग्ने ह्येतां कुरु॥ ४०॥ यत्ने॥



६४

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ वाऽऽर्चयेन्मन्त्रं धीः सोमेन स्तुतिं चिच्छिन्ता ॥ २ ॥ एषिवीमन् ॥ मृतं स्पृति
 पृथुताऽऽश्रये सन्दत्तवीर्यम् ॥ ३ ॥ वाऽऽर्चयेन्मन्त्रं धीः सोमेन स्तुतिं चिच्छिन्ता ॥ ४ ॥ एषिवीमन् ॥ मृतं स्पृति
 सवीर्यं संगृहीतुं सोमे सन्दत्तवीर्यम् ॥ ५ ॥ वाऽऽर्चयेन्मन्त्रं धीः सोमेन स्तुतिं चिच्छिन्ता ॥ ६ ॥ एषिवीमन् ॥ मृतं स्पृति
 द्विपात्रं तु यथा दत्त्वा कथं स ध्वं यस्त्वनानुभूय ॥ ७ ॥ ने ध्वं यत्नं स ॥ ८ ॥ न ॥ स ॥ म
 वदन्त सोमेन सह राज्ञी ॥ यस्मै कुर्यात्तिष्ठन् ह्यरास्तु न जन्त्या रयामसि ॥ ९ ॥ नाश
 यित्री मता संसा ॥ नाशयित्री मता सुस्पर्शी सऽउपविता मसि ॥ अथोपातस्य यन्द्वा रोगा यथा
 को नो न सिना शनी ॥ १० ॥ त्वार्जुन धर्वा ॥ त्वार्जुन धर्वाऽऽश्वनस्तु मिन्दुस्त्वा मृतं स्पृति ॥ ११ ॥ त्व
 गोषधे सोमेना ज विद्वा न्यन्द्वा दमुच्यत ॥ १२ ॥ सह स्वये ॥ सह स्वमेऽङ्गना तो ॥ सह स्वये
 ताना वत ॥ सह स्व सं ध्वं यथा यमानं सह माना स्या यधे ॥ १३ ॥ दीर्घो दुस्त ॥ दीर्घो दु
 स्तऽऽश्वधे स्व नित्यं ता यस्मै वत्वा स्व नो म्यहम् ॥ अथो त्वन्दीर्घो दुस्तु त्वा शत वल्गा
 विनो हता ॥ १४ ॥ त्वमुत्तमा ॥ त्वमुत्तमा सोषधे तव वृन्दाऽऽपस्तम्भ ॥ १५ ॥ उपस्तम्भ

६४



स्यस्तु मनु त्वती मनु च म वा था ये स स्था तु वै न प थ साम प्रति छि त्याः अ न नि न्दः म म य त्वा
 प्रथम जा दे वे बु दि वो मा त्रे यां त नि स्मा प्र य नु वि ध र्ता वा द म धि प ति श्व ते त्वा त्वा त्वा स चि दा
 ना ना क स्प ए षे स्व र्ग्ये लो के य ज मा न श्र सा द द न्नु ॥१२॥ स्व रा ड सि ष्ठि म् क र्ता वा द म
 दि अ उ त स्त दे वाः अ धि प त द्वा सो मो हे ती ना म्प्र ति ध र्ते क वि ष्ठ श र्क ॥१३॥ अ धि प त द्वा
 द्वा थ स द तु नि ष्ठे व ल्ता मु च्छ म क था ये स स्था तु वै न ज थ साम प्र ति छि त्याः अ न नि न्दः
 वि न्दः म य द स्त्वा प्र थ म जा दे वे बु दि वो मा त्रे यां त नि स्मा प्र य न्ना ध र्ता वा द म
 धि प ति श्व ते त्वा स चि दा ना ना क स्प ए षे स्व र्ग्ये लो के य ज मा न श्र सा द द न्नु ॥
 ॥१३॥ अ धि प त्वा सि ष्ठि ती दि ग्गि व श्वे त दे वाः अ धि प त द्वा ष्ठि ह स्य ति हे ती ना म्प्र
 ति ध र्ता त्रि ता व त्र य सि ष्ठि शो त्वा सो मो ए धि व्या थ स द ता म् श्व दे वा ग्नि मा उ
 ते उ न्द्ये म क था ये स स्त्री ता थ शा ङ्ग र जे व ते सा मि ना प्र ति छि त्याः अ न नि न्दः
 म य द स्त्वा प्र थ म जा दे वे बु दि वो मा त्रे यां त नि स्मा प्र य नु वि ध र्ता वा द म धि प ति